सांचे को झूठा कहे, झूठे को कहे सांच।
ए भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच।। २६ ।।

यह सत (आत्मा) को झूठा कहते हैं और झूठे शरीर को सत माने बैठे हैं। संसार के सभी लोग झूठे शरीर में ही लिप्त हैं। इस बात को और भी जाहिर करके बताती हूं।

आकार को निराकार कहे, निराकार को आकार।
आप फिरे सब देखे फिरते, ए असत यों निरधार।। २७ ।।

यह शरीर जो मिट जाने वाला है, उसे आकार कहते हैं। आत्मा जो सदा अखण्ड है (अजर-अमर है) उसे निराकार कहते हैं। सारे जगत के जीव इसी चक्कर में घूम-फिर रहे हैं। इस तरह से यह झूठा है।

मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार।
तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार।। २८ ।।

सभी संसार के लोग कहते हैं कि यह वृक्ष रूपी ब्रह्माण्ड बिना जड़ (आधार) के खड़ा है। तो इस सपने के ब्रह्माण्ड के जो जीव हैं, उन्हें आकार (साकार) कैसे कहा जाए?

आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास।
काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास।। २९ ।।

जो जन्मता और मरता है, उसे आकार (साकार) नहीं कहना चाहिए। मरने वाले को (शरीर को) निराकार और सदा रहने वाले (आत्मा) को आकार (साकार) कहना ही ठीक है (उचित है)।

जिन रांचो मृग जल दृष्टें, जाको नाम प्रपंच।
ए छल गफलत को कियो, ऐसो रच्यो उलटो संच।। ३० ।।

श्री महामति जी कहती हैं कि इस तरह के मृग जल (मृग तृष्णा) के प्रपंच (जाल) में मत फंसो। यह पूरा संसार उलटा है और संशय से भरा है।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३९५ ।।

सनन्ध–वेद का कोहेड़ा

ए खेल देख्या ख्वाब का, ए जो लरे लोक विवाद।
पर लराए इनको जिने, नेक कहूं तिनकी आद।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मैंने सपने का ब्रह्माण्ड देखा इसमें लोग आपस में लड़ते हैं। जो इनको लड़वाता है, मैं उसकी थोड़ी सी हकीकत बताती हूं।

जिन बंधे हुए अंधे, फिरे सो उलटे फेर।
सो नेक बताए पीछे, उड़ाए देऊं अन्धेर।। २ ।।

इनमें बंधे हुए अन्धे की तरह उलटे चल रहे हैं, इसलिए थोड़ी-सी हकीकत बताकर अज्ञान का अन्धकार मिटा देती हूं।

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गूंथी जाल।
याकी भी नेक केहे के, देऊं सो आंकड़ी टाल।। ३ ।।

वेद के कोहेड़े (अन्धकार) की जाली बड़ी बारीक गूंथी है। इसकी थोड़ी-सी हकीकत कहकर संशय मिटा देती हूं।

Nijanand App

वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध।
मन नारद फिरे दसो दिस, वेदें बांध किए बेसुध।।४।।

ब्रह्माण्ड का आकार सपने का है। इसमें बुद्धि के मालिक ब्रह्माजी हैं। मन के मालिक नारद दसों दिशाओं में घूमते हैं। इस तरह से वेदों ने सबको बांधकर बेसुध कर रखा है।

लगाए सब रब्दें, व्याकरण वाद अन्धकार।
या बुधें बेसुध हुए, विवेक खाली विचार।।५।।

व्याकरण के वाद-विवाद में सबको लड़वा रखा है। इस तरह से सारा संसार वेदों की बुद्धि से (ज्ञान से) बेसुध हो गया है और अन्धकार के ज्ञान में इनका विवेक और विचार शून्य हो गया है (रहा ही नहीं)।

बंध जो बांधे या बिध, हर वस्त के बारे नाम।
सो बानी ले बड़ी कीनीं, ए सब छल के काम।।६।।

इस तरह का बंध बांध दिया है कि हर अक्षर के बारह नाम रख दिए हैं और वाणी का विस्तार कर दिया है। यह सब कपट (छल) के काम हैं।

लुगे लुगे के जुदे माएने, द्वादस के प्रकार।
उरझाए मूल माएने, बांधे अटकलें अपार।।७।।

एक-एक शब्द के अलग-अलग बारह तरह से माएने करते हैं। मूल भावों को उलटा कर उलझा देते हैं और अटकल से तरह-तरह के अर्थ करते हैं।

अर्थ को डालने उलटा, अनेक तरफों ताने।
मूढ़ों को समझावने, रेहेस बीच में आने।।८।।

अर्थ को उलटने के लिए व्याकरण से खींचातानी करते हैं और मूर्खों को समझाने के लिए बीच में कहानियां सुनाते हैं।

ऐसी अनेक आंकड़ियों मिने, बोले बारे तरफ।
रेहेस रंचक धरे बीच में, समझाए न किने हरफ।।९।।

ऐसी अनेक आंकड़ियां (घुंडियां) हैं, जिनके बारह-बारह अर्थ करते हैं। इससे किसी को भी हकीकत का पता चलता नहीं है, परन्तु उस हकीकत को छिपाने के लिए बीच में मनगढ़ंत कहानियां सुनाते हैं।

बारे तरफों बोलते, एक अखर एक मात्र।
ऐसे बांध बत्तीस श्लोक में, बड़ा छल किया यों सास्त्र।।१०।।

एक अक्षर में बारह मात्राएं लगाकर बारह तरह से बोलते हैं। ऐसे बत्तीस अक्षर जोड़कर श्लोक बनाकर शास्त्रों ने बड़ा छल किया है।

बारे मात्र एक अखर, अखर श्लोक बत्तीस।
छल एते आड़े अर्थ के, और खोज करें जगदीस।।११।।

एक अक्षर की बारह मात्राएं तथा एक श्लोक के बत्तीस अक्षर बनाकर (यानी एक अक्षर के बारह अर्थ और बत्तीस अक्षरों के तीन सौ चौरासी अर्थ हुए तो ऐसे श्लोक वाले वेदों के ज्ञान पढ़कर आप स्वयं सोचें कि क्या हकीकत में परमात्मा मिलेगा?) परमात्मा की खोज करते हैं। जहां हकीकत के अर्थ के सामने इतने ज्यादा अर्थ हों तो वहां परमात्मा कैसे मिलेगा?

Nijanand App

अर्थ आड़े कई छल किए, तिन अर्थों में कई छल।
अखरा अर्थ न होवहीं, कियो भावा अर्थ अटकल।। १२ ।।

अर्थों की आड़ में भी कई तरह घुमा-फिराकर अर्थ करते हैं और दुनियां को ठगते हैं। अक्षर का तो अर्थ आता नहीं है और भावार्थ अटकल से करते हैं।

जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत।
सो हरफ दृढ़ क्यों होवहीं, जो एती तरफ फिरत।। १३ ।।

जिसका नाम संस्कृत है वह संशय से ही बनी है, क्योंकि इसके कई अर्थ निकलते हैं, तो वह एक सच्चाई कैसे पाई जाए?

सो पढ़े पंडित जुध करे, एक कांने को टुकड़े होए।
आपस में जो लड़ मरे, एक मात्र न छोड़े कोए।। १४ ।।

संस्कृत पढ़े विद्वान एक मात्रा मात्र के लिए झगड़ा करते हैं। वह एक मात्रा भी नहीं छोड़ते और आपस में लड़ मरते हैं।

ए वाद बानी सिर लेवहीं, सुध बुध जावे सान।
स्वांत त्रास न आवे सुपने, ऐसा व्याकरण ग्यान।। १५ ।।

इस वाद-विवाद में बेसुधी में जो वचन मुंह से निकल जाते हैं, उसी को पकड़ लेते हैं। व्याकरण की व्याख्या में उलझे रहते हैं। उनको सपने में भी शान्ति नहीं मिलती।

ए वानी ले बड़ी कीनी, दियो सो छल को मान।
सो खैंचा खैंच ना छुटही, लिए क्रोध गुमान।। १६ ।।

इस तरह से संस्कृत के श्लोकों की वाणी के ग्रन्थों का विस्तार किया। पण्डितों की आपस की खींच-तान नहीं छूटती है तथा वह क्रोध और बुद्धि के अहंकार में ही भटकते हैं।

ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़।
बड़े होए करे माएने, एह चली छल रूढ़।। १७ ।।

ऐसी छल की वाणी को पढ़ने वालों को पण्डित कहते हैं। मूर्ख लोग ही उनका मान करते हैं। यह पण्डित लोग अपने को बड़ा बताकर तरह-तरह के अर्थ करते हैं, ऐसी छल की रीति चल रही है।

सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित।
जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़े नहीं पंडित।। १८ ।।

सीधी भाषा जिसके अर्थ भी सीधे होते हैं और सभी लोग समझते हैं, उस भाषा को पण्डित लोग कभी ग्रहण नहीं करते हैं।

एक अर्थ न कहे सीधा, ए जाहेर हिंदुस्तान।
अर्थ को डालने उलटा, जाए पढ़े छल बान।। १९ ।।

हिन्दुस्तानी भाषा में वह पण्डित एक भी सीधी बात नहीं बताते, बल्कि अर्थ को उलटने के वास्ते छल की बोली (संस्कृत) ही बोलते हैं।

ए छल देखो मोमिनों, और है सब छल।
रूह छल न छूटे छल थें, जो देखो करते बल।। २० ।।

हे मोमिनो! देखो, सब जगह छल ही छल है। छल के जीव, छल के ज्ञान (संस्कृत) से बाहर (माया से बाहर) नहीं जा सकते, चाहे कितनी ही आजमाइश (उपाय) कर लो।

Nijanand App

एक उरझन वैराट की, दूजी वेद की उरझन।
ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल है अति घन।। २१ ।।

एक उलझन (घुण्डी) वैराट की है। इसी तरह दूसरी वेद की है। यह तो मैंने तुम्हें समझाने के लिए थोड़ी-सी बताई है, परन्तु इस छल का तो बहुत बड़ा विस्तार है।

मुख उदर के कोहेड़े, रचे मिने सुपन।
और सुध इनों क्यों होए, ए खेलें गफलती जन।। २२ ।।

एक मुख (वेद) का, दूसरा नाभि (वैराट) का यह दोनों धुन्ध हैं, जो सपने में बनाए गए हैं, इसलिए इसके अन्दर खेलने वाले गाफिल (बेसुध) लोगों को इनकी पहचान नहीं होती।

वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह।
देव जैसी पातरी, ए चलत दुनियां जेह।। २३ ।।

वैराट और वेद दोनों को देखकर के 'जैसा देव तैसी पूजा' के सिद्धान्त के अनुसार दुनियां चलती है और समझकर सेवा करती है।

जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत।
ए मोहोरे उपजे अंधेर से, ताको ए सब सत।। २४ ।।

यहां के साधु तथा शास्त्रकारों की उत्पत्ति माया से हुई है और वह अपनी बुद्धि के अनुसार ही बोलते हैं तथा उनको यह माया का सब संसार सत लग रहा है।

तबक चौदे देखे वेदों, निराकार लो वचन।
उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहें सुंन।। २५ ।।

वेदों ने चौदह लोकों को देखा और वचन से निराकार तक वर्णन किया। आगे अटकल से कहकर फिर निराकार में ही डूब गए (समा गए)।

ए देखो तुम मोमिनों, पांचो उपजे तत्व।
ए गफलत में रूह खेलहीं, सब रूहों की उतपत।। २६ ।।

हे मोमिनो! तुम देखो, यह ब्रह्माण्ड पांच तत्वों से बना है। इसमें संशय ही संशय में जीव भटकते हैं और जीव जन्मते हैं।

रूह सबों में पसरी, थावर और जंगम।
पेड़ याको जुलमत, मलकूत में खसम।। २७ ।।

सब चर-अचर ब्रह्माण्ड में जीव व्यापक है जिनकी उत्पत्ति निराकार से है तथा जिनका मालिक बैकुण्ठ में रहता है।

दसो दिसा भवसागर, देखत एह सुपन।
गिरदवाए आवरण गफलत, निराकार कहावे सुंन।। २८ ।।

दसों दिशाओं में सपने का भवसागर है, इसके चारों तरफ मोह तत्व (संशय) का आवरण है जिसे निराकार और शून्य कहते हैं।

तबक चौदे कोहेड़ा, ए सबे कुदरत।
सुर असुर कई अनेक विध, खेलें ख्वाबी दम गफलत।। २९ ।।

चौदह लोक सब धुन्ध में हैं। इन सबमें माया व्यापक है। यहां पर देव और असुर कई तरह के संशय से भरे जीवों के साथ खेलते हैं।

Nijanand App

वनस्पति पसु पंखी, आदमी जीव जंत।
मछ कछ सब सागर, रच्यो एह प्रपंच।। ३० ।।

यहां वनस्पति, पशु, पक्षी, आदमी, जीव-जन्तु, मछली, कछुआ तथा सागर सब झूठ के ही हैं।

रूह मिने जुदी जिनसों, कहियत चारों खान।
जड़ चलें पेट पांउ परे, लाख चौरासी निरमान।। ३१ ।।

इसके अन्दर जीव तरह-तरह के तनों में चार तरह से (अण्डे से, शरीर से, पसीने से तथा अग्नि से) पैदा होते हैं कई पेड़ की तरह जड़ होकर एक स्थान पर खड़े रहते हैं। कई पांव से चलते हैं और कई पेट से चलते हैं, कई पंख से, इस तरह से चौरासी लाख योनियों का निर्माण है।

कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल।
खेलें सब ख्वाबी पुतले, रूह आड़ी गफलत पाल।। ३२ ।।

कोई बैकुण्ठ, कोई यमपुरी, कोई स्वर्ग, कोई पाताल में सपने के जीव खेलते हैं। इनके आगे मोह तत्व (निराकार) का परदा पड़ा है।

जो बनजारे खेल के, तिन सिर जम को दंड।
कोई दिन स्वर्ग मिने, पीछे नरक के कुंड।। ३३ ।।

इस संसार में जो भी जीव खेल रहे हैं उनको यमराज के सामने जाना पड़ता है तथा कर्मों के हिसाब से कुछ दिन स्वर्ग का सुख लेकर पीछे नरक के कुण्ड में सजा भुगतनी पड़ती है।

लाठी तेरे लोक पर, संजम पुरी सिरदार।
जो जाने नहीं जगदीस को, तिन सिर जम की मार।। ३४ ।।

तेरह लोकों के ऊपर बैकुण्ठ में भगवान विष्णु मालिक हैं। जिसने उनकी पहचान कर पूजा नहीं की उसे यमराज की मार खानी पड़ती है।

ए छल बनज छोड़ के, करें बैकुंठ को बेपार।
ए सत लोक याही को, कोई गले निराकार।। ३५ ।।

संसार में कपट का रास्ता (धन्धा) छोड़कर जो बैकुण्ठ जाने का प्रयत्न करते हैं, वह इसी बैकुण्ठ को ही सत मान बैठे हैं। यह अन्त में निराकार में गल जाते हैं।

चौदे तबक इंड में, जिमी जोजन कोट पचास।
पहाड़ कुली अष्ट जोजन, लाख चौसठ वास।। ३६ ।।

चौदह लोक इसी ब्रह्माण्ड में हैं। इसमें पचास करोड़ योजन जमीन बताई है। उसमें पहाड़ कुल आठ लाख योजन में हैं तथा चौसठ लाख योजन में बस्ती है।

पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत।
ए निरमान बांध के, ले ख्वाब किया सत।। ३७ ।।

पांच तत्व तथा छठा जीव से बना शरीर स्वप्न का है, इसे शास्त्रों ने अपने मत में सत कहा है।

देखे सातों सागर, देखे सातों लोक।
पाताल सातों देखिए, ए गफलत उड़े सब फोक।। ३८ ।।

मैंने सातों सागरों को देखा (लवण, रस, शराब, घृत, दधि, क्षीर, मीठा पानी) तथा सातों लोकों (भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सतलोक) तथा सातों पातालों (अतल,

Nijanand App

वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) को देखा, परन्तु यह सब माया के हैं। पल में प्रलय में आने वाले हैं।

ए छल बल देखिया, धखत आग को कूप।
ए नख सिख लों देखिया, बड़ा दज्जाल का रूप।। ३९ ।।

इस माया की ताकत को देखो जो आग का ही कुंआ है और पैर से सिर तक शैतान का ही रूप है।

ताए नारायन कर सेवहीं, ऐसी ए कुफरान।
पीर जैसे मुरीद तैसे, एक रस ए निरवान।। ४० ।।

यह सारे जगत के जीव नारायण को ही परमात्मा मानकर सेवा करते हैं। 'जैसा गुरु वैसा चेला' दोनों ही सारे ब्रह्माण्ड में एक रूप से रहते हैं। इस तरह यह भ्रम का ही संसार है।

ए झूठे झूठा खेलहीं, नहीं सांच की सुध।
ए पीर मुरीद देखिए, कही दोऊ की बिध।। ४१ ।।

इस संसार के झूठे जीव झूठ में खेलते हैं। इनको सत् जो पारब्रह्म है उसकी सुध नहीं है। संसार में गुरु और चेले दोनों की हकीकत मैंने बता दी है।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ४३६ ।।

सनन्ध–हांसी की

मोमिन यामें न रांचहीं, जाको सांचसों सनेह।
निपट ए कछुए नहीं, भी देखो नेक बिध एह।। १ ।।

हे मोमिनो! तुम्हारा सत से प्रेम है, इसलिए तुम झूठे संसार में मगन नहीं होना। निश्चित ही यह कुछ भी नहीं है। इसकी भी थोड़ी-सी हकीकत देख लो।

ए जो पीर मुरीद दोऊ कहे, कुफरान या दज्जाल।
अर्स रूहों को देखाए के, उड़ाए देसी ए ताल।। २ ।।

गुरु और चेला जो दो कहे हैं, वह दोनों ही या तो काफिर हैं या शैतान के रूप हैं। अर्श के मोमिनों को यह खेल दिखाकर ब्रह्माण्ड समाप्त कर देंगे।

ए छल ऐसा तो रच्या, जो तुम मांग्या देखन।
जिन तुम बांधो आप को, अर्स के मोमिन।। ३ ।।

यह छल का संसार इस ढंग से बना है जैसा तुमने देखना चाहा था, इसलिए अब तुम अपने आप को इस में मत बांधो, क्योंकि आप तो अर्श के मोमिन हो।

जो कोई रूहें निसबती, ए हांसी का है ठौर।
खसम वतन आप भूल के, कहा देखत हो और।। ४ ।।

जो कोई भी यहां मेरे परमधाम के साथी मोमिन हैं, वह ध्यान रखें। यह हंसी का ठिकाना है। इसमें तुम अपने आप को, घर को तथा धनी को छोड़कर और क्या देख रहे हो?

मोमिनों तुम को उपज्या, खेल देखन का ख्याल।
जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए तो हांसी का हवाल।। ५ ।।

हे मोमिनो! तुमको खेल देखने की चाहना उत्पन्न हुई थी। जिस माया का कोई आधार ही नहीं है, उसने तुम्हें बांध रखा है। इस तरह यह हंसी का विवरण है।

Nijanand App